

## मेंढकराज और नाग

एक कुएं में बहुत से मेंढक रहते थे। उनके राजा का नाम था गंगदत्त। गंगदत्त बहुत झगड़ालू स्वभाव का था। आसपास दो-तीन और भी कुएं थे। उनमें भी मेंढक रहते थे। हर कुएं के मेंढकों का अपना राजा था।

हर राजा से किसी न किसी बात पर गंगदत्त का झगड़ा चलता ही रहता था। वह अपनी मूर्खता से कोई गलत काम करने लगता और बुद्धिमान मेंढक रोकने की कोशिश करता तो मौका मिलते ही अपने पाले गुंडे मेंढकों से पिटवा देता। कुएं के मेंढकों के भीतर गंगदत्त के प्रति रोष बढ़ता जा रहा था। घर में भी झगड़ों से चैन न था। अपनी हर मुसीबत के लिए दोष देता।

एक दिन गंगदत्त पड़ोसी मेंढक राजा से खूब झगड़ा। खूब तू-तू, मैं-मैं हुई। गंगदत्त ने अपने कुएं में आकर बताया कि पड़ोसी राजा ने उसका अपमान किया है। अपमान का बदला लेने के लिए उसने अपने मेंढकों को आदेश दिया कि पड़ोसी कुएं पर हमला करें सब जानते थे कि झगड़ा गंगदत्त ने ही शुरू किया होगा। कुछ सयाने मेंढकों तथा बुद्धिमानों ने एकजुट होकर एक स्वर में कहा, 'राजन, पड़ोसी कुएं में हमसे दुगने मेंढक हैं। वे स्वस्थ व हमसे अधिक ताकतवर हैं। हम यह लड़ाई नहीं लड़ेंगे।'

गंगदत्त सन्न रह गया और बुरी तरह तिलमिला गया। मन ही मन उसने ठान ली कि इन गद्दारों को भी सबक सिखाना होगा। गंगदत्त ने अपने बेटों को बुलाकर भड़काया, 'बेटा, पड़ोसी राजा ने तुम्हारे पिताश्री का घोर अपमान किया है। जाओ, पड़ोसी राजा के बेटों की ऐसी पिटाई करो कि वे पानी मांगने लग जाएं।'

गंगदत्त के बेटे एक-दूसरे का मुंह देखने लगे। आखिर बड़े बेटे ने कहा, 'पिताश्री, आपने कभी हमें टराने की इजाजत नहीं दी। टराने से ही मेंढकों में बल आता है,

हौसला आता है और जोश आता है। आप ही बताइए कि बिना हौसले और जोश के हम किसी की क्या पिटाई कर पाएंगे?’

अब गंगदत्त सबसे चिढ़ गया। एक दिन वह कुढ़ता और बड़बड़ाता कुएं से बाहर निकल इधर-उधर घूमने लगा। उसे एक भयंकर नाग पास ही बने अपने बिल में घुसता नजर आया। उसकी आंखें चमकीं। जब अपने दुश्मन बन गए हों तो दुश्मन को अपना बनाना चाहिए। यह सोच वह बिल के पास जाकर बोला, 'नागदेव, मेरा प्रणाम।'

नागदेव फुफकारा, 'अरे मेंढक मैं तुम्हारा बैरी हूं। तुम्हें खा जाता हूं और तू मेरे बिल के आगे आकर मुझे आवाज दे रहा है।

गंगदत्त टर्काया, 'हे नाग, कभी-कभी शत्रुओं से ज्यादा अपने दुख देने लगते हैं। मेरा अपनी जाति वालों और सर्गों ने इतना घोर अपमान किया है कि उन्हें सबक सिखाने के लिए मुझे तुम जैसे शत्रु के पास सहायता मांगने आना पड़ा है। तुम मेरी दोस्ती स्वीकार करो और मजे करो।'

नाग ने बिल से अपना सिर बाहर निकाला और बोला, 'मजे, कैसे मजे?'

गंगदत्त ने कहा, 'मैं तुम्हें इतने मेंढक खिलाऊंगा कि तुम मोटाते-मोटाते अजगर बन जाओगे।'

नाग ने शंका व्यक्त की, 'पानी में मैं जा नहीं सकता। कैसे पकड़ूंगा मेंढक?'

गंगदत्त ने ताली बजाई, 'नाग भाई, यहीं तो मेरी दोस्ती तुम्हारे काम आएगी। मैंने पड़ोसी राजाओं के कुओं पर नजर रखने के लिए अपने जासूस मेंढकों से गुप्त सुरंगें खुदवा रखीं हैं। हर कुएं तक उनका रास्ता जाता है। सुरंगें जहां मिलती हैं, वहां एक कक्ष है। तुम वहां रहना और जिस-जिस मेंढक को खाने के लिए कहूं, उन्हें खाते जाना।'

नाग गंगदत्त से दोस्ती के लिए तैयार हो गया। क्योंकि उसमें उसका लाभ ही लाभ था। एक मूर्ख बदले की भावना में अंधे होकर अपनों को दुश्मन के पेट के हवाले करने को तैयार हो तो दुश्मन क्यों न इसका लाभ उठाए?

नाग गंगदत्त के साथ सुरंग कक्ष में जाकर बैठ गया। गंगदत्त ने पहले सारे पड़ोसी मेंढक राजाओं और उनकी प्रजाओं को खाने के लिए कहा। नाग कुछ सप्ताहों में

सारे दूसरे कुओं के मेंढकों को सुरंगों के रास्ते जा-जाकर खा गया। जब सब समाप्त हो गए तो नाग गंगदत्त से बोला, 'अब किसे खाऊं? जल्दी बता। चौबीस घंटे पेट फुल रखने की आदत पड़ गई है।'

गंगदत्त ने कहा, 'अब मेरे कुएं के सभी सयाने और बुद्धिमान मेंढकों को खाओ।'

वह खाए जा चुके तो प्रजा की बारी आई। गंगदत्त ने सोचा, 'प्रजा की ऐसी की तैसी। हर समय कुछ न कुछ शिकायत करती रहती है। उनको खाने के बाद नाग ने खाना मांगा तो गंगदत्त बोला, 'नाग मित्र, अब केवल मेरा कुनबा और मेरे मित्र बचे हैं। खेल खत्म और मेंढक हजम।'

नाग ने फन फैलाया और फुफकारने लगा, 'मेंढक, मैं अब कहीं नहीं जाने का। तू अब खाने का इंतजाम कर वर्ना।'

गंगदत्त की बोलती बंद हो गई। उसने नाग को अपने मित्र खिलाए फिर उसके बेटे नाग के पेट में गए। गंगदत्त ने सोचा कि मैं और मेंढकी जिंदा रहे तो बेटे और पैदा कर लेंगे। बेटे खाने के बाद नाग फुफकारा, 'और खाना कहां है? गंगदत्त ने डरकर मेंढकी की ओर इशार किया। गंगदत्त ने स्वयं के मन को समझाया, 'चलो बूढ़ी मेंढकी से छुटकारा मिला। नई जवान मेंढकी से विवाह कर नया संसार बसाऊंगा।'

मेंढकी को खाने के बाद नाग ने मुंह फाड़ा, 'खाना।'

गंगदत्त ने हाथ जोड़े, 'अब तो केवल मैं बचा हूं। तुम्हारा दोस्त गंगदत्त। अब लौट जाओ।'

नाग बोला, 'तू कौन-सा मेरा मामा लगता है और उसे हड़प गया।'

सीख: अपनो से बदला लेने के लिए जो शत्रु का साथ लेता है, उसका अंत निश्चित है।

## मैंडकगण्ड उर नग

एक कुंभ में गङ्गा में मैंडक गङ्गा के उर का नाम था गंगड्डु गंगड्डु गङ्गा  
एगङ्गालु भूराव का था। मुमपाम टै-डीन उर ही कुंभ था। उनमें ही मैंडक गङ्गा के उर का  
कै मैंडकें का मपना गङ्गा था।

उर गङ्गा में किभी न किभी गङ्गा पर गंगड्डु का एगङ्गा गलङ्गा की गङ्गा था। वरु मपनी  
भुङ्गा में कैरें गलङ्गा का म करने लगङ्गा उर गङ्गाभान मैंडक रेंकने की कैमिम करङ्गा उे  
भै का भिलङ्गा की मपने पाले गुरु मैंडकें में पिएवा टैङ्गा। कुंभ के मैंडकें के हीउर गंगड्डु के  
पुडि रेंध गङ्गा र गङ्गा था। अर मैं ही एगङ्गे में गैन न था। मपनी उर भुङ्गा के लिए टैध  
टैङ्गा।

एक दिन गंगड्डु पडेभी मैंडक गङ्गा में एगङ्गा एगङ्गा। एगङ्गा उ-उ, मैं-मैं करें। गंगड्डु ने मपने  
कुंभ में मुकर गङ्गा कि पडेभी गङ्गा ने उमका मपभान किया है। मपभान का गङ्गा लेने  
के लिए उमने मपने मैंडकें के मुटैम दिया कि पडेभी कुंभ पर लभला करे मर एनउे घे कि  
एगङ्गा गंगड्डु ने ही मुरु किया हैगा।

कुळ मयने मैंडकें उघा गङ्गाभानें ने एकए केकर एक भुङ्गा में कला, 'गङ्गा, पडेभी कुंभ  
में लभमे एगङ्गे मैंडक है। वै भुङ्गा व लभमे मणिक उाकउवर है। लभ वरु लङ्गा नकी लङ्गा।'

गंगड्डु मत्र गङ्गा उर गङ्गा उर उर उिलभिला गङ्गा। मन की मन उमने एन ली कि उन  
गङ्गा के ही मङ्क भिपाना हैगा। गंगड्डु ने मपने गेए के गलाकर उरकाया, 'गेए, पडेभी  
गङ्गा ने उमने पिङ्गा की का भेर मपभान किया है। एउ, पडेभी गङ्गा के गेए की ली पिएरें  
करे कि वै पानी भंगने लग एरें।'

गंगड्डु के गेए एक-एमरे का भुङ्गा टैपने लगे। मपिपर गङ्गा गेए ने कला, 'पिङ्गा, मपने  
कही लभे एगङ्गे की उरएउ नकी ली। एगङ्गे में ही मैंडकें में गल मुङ्गा है, लीभला मुङ्गा है  
उर ऐम मुङ्गा है। मप की गङ्गा कि गिना लीभले उर ऐम के लभ किभी की कृ पिएरें  
कर पाएगे?'

मर गंगड्डु मरमें गिङ्गा गङ्गा। एक दिन वरु कुङ्गा उर गङ्गागङ्गा कुंभ में गङ्गा निकल  
उर-उर भुङ्गे लगा। उमें एक रुंकर नग पाम की गने मपने गिल में भुङ्गा नएर  
मुया। उमकी मुंठे मभकी। एर मपने एमन गन गङ्गा के उे एमन के मपना गनाना गङ्गा।  
वरु भेग वरु गिल के पाम एकर गेला, 'नगएव, भेरा पुंभ।'

नगएव द्रुङ्गा, 'मरे मैंडक मैं उमने गैरी कं। उमने एउ कं उर उमने गिल के मुगे  
मुकर भुङ्गे मुवाए टै रला है।

गंगड्डु एगङ्गा, 'ले नग, कही-कही मङ्गा में एमन मपने एप टैने लगउे है। भेरा मपनी

एडि वलें छर भगें नें उउना भेर सपभान किय कैं कि उउं, मरक भिपाने के लिए भुए उभ  
लैमे मरू के पाम मरुा घउ भंगने मुन पुरा कैं उभ मेरी ऐभी वीकार करे छर भए करे।

नग ने गिल मे सपन भिर गरुन निकाला छर गेला, 'भए, कैमे भए?'

गंगरु ने कला, 'मै उउं, उउने भैक पिपला उंगा कि उभ भएउ-भएउे मएगर मन एउगे।'

नग ने मंका वृकु की, 'पानी मे मै ए नलीं मकडा कैमे पकहुंगा भैक?'

गंगरु ने उली गरुं, 'नग छरं, वलीं उे मेरी ऐभी उभरुं काभ मएगी। मैने पहेभी गरुं  
के कुं पर नएर रापने के लिए सपने एभुम भैकें मे गुपु मुरंगे एउवा रापीं कैं कर कुं  
उक उनका राभु एउा कैं मुरंगे एउा भिलडी कैं, वरुं एक कब कैं उभ वरुं गरुना छर  
एिम-एिम भैक के पाने के लिए करुं, उउं, पाउे एना।'

नग गंगरु मे ऐभी के लिए उैवार के गया। कुंकि उभमे उभका लारु नी लारु घा। एक  
भुए गरुले की छारना मे मुंए केकर सपने के एसां भन के पए के रुवाले करने के उैवार के  
उे एमन कुं न उभका लारु उंए?

नग गंगरु के भाष मुरंग कब मे एकर गै० गया। गंगरु ने परले मारे पहेभी भैक  
गरुं छर उनकी परुं के पाने के लिए करुं। नग कुळ मपुरां मे मारे एभरुं कुं के  
भैकें के मुरंगे के राभु ए-एकर पा गया। एम मरु मभापु के गरु उे नग गंगरु मे गेला,  
'मम किमे पाउं? एलीं गडा। एेगीभ भंए पए एल रापने की मुउउ परु गरुं कैं।'

गंगरु ने कला, 'मम मेरे कुं के मरी मयाने छर वृद्धिभान भैकें के पाउ।'

वरु पाए ए एके उे पर की मरी मुरं। गंगरु ने भेएा, 'पर की ऐभी की उैभी। कर मभय  
कुळ न कुळ मिकायउ करडी गरुडी कैं उनके पाने के गरु नग ने पाना भंगने उे गंगरु  
गेला, 'नग भिरु, मम केवल मेरा कुनरा छर मेरे भिरु गेते कैं पिल एउा छर भैक रुएभा।'

नग ने एन टैलाया छर एउकारने लगा, 'भैक, मै मम कलीं नलीं एने का उु मम पाने  
का उंउएभ कर वरुं।'

गंगरु की गेलडी गंरु के गरुं। उभने नग के सपने भिरु पिपलाए एर उभके गेते नग के  
पए मे गरु। गंगरु ने भेएा कि मै छर भैक की एिएर रुके उे गेते छर पिएर कर लेंगे। गेते  
पाने के गरु नग एउकारा, 'छर पाना कलां कैं? गंगरु ने एरकर भैक की की छर  
उमार किय। गंगरु ने भुयं के भन के मभाएया, 'एले वृद्धी भैक की मे कएकारा भिला। नरं  
एवान भैक की मे विवारु कर नया मभार मभाउंगा।'

भैक की के पाने के गरु नग ने भुंरु एरु, 'पाना।'

गंगरु ने काष ऐरु, 'मरु ते केवल मै गरा क्रु। उभरुन ऐभु गंगरु। मरु लीए राउ।  
नगर मैल', 'उ, कौन-भा मेरा भाभा लगउ कै उर उमे करुप गया।

भीप: मपने मे गल्ला लेने के लिए ऐ मरु का भाष लेउ कै, उभका मंड निश्रित कै।

मनुवरु - पूगय वरु